REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

'आधे–अधूरे' नाटक में नारी पात्रः एक अध्ययन

संजू
एम0ए., (हिन्दी नेट)

सारांश :

साहित्य में सदा ही समाज की परिस्थितयाँ तथा परिवेश समाहित रहे हैं। 'आधे–अधूरे' नाटक में मध्यम वर्गीय परिवार के दाम्पत्य जीवन का सजीव चित्रण किया गया है। सावित्री और उसका परिवार आर्थिक तंगी से जुझ रहा है इसी सामाजिक स्तीरकरण की भूख के कारण मानवीय संतोष का अधूरापन यहाँ पर स्पष्ट दिखाई देता है। सावित्री की महत्वपूर्ण भूमिका है। वह सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए शाश्वत सत्य नहीं पहचान पाती है। अपने पति से कभी सन्तुष्ट नहीं होती जिसके कारण दोनों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। पति–पत्नी के सम्बन्धों का सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बड़ी बेटी भी माँ की तरह कभी सन्तुष्ट नहीं होती और अपने उतावलेपन में माँ के प्रेमी के साथ भाग जाती है परन्तु कभी भी खुश नहीं रह पाती। सावित्री के कन्धों पर सम्पूर्ण परिवार का दायित्व है और वह अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में लगी रहती है। इस नाटक की सभी नारियाँ अतृप्ति के बवंडर में फँसी हुई है। आधुनिक युग में परिवार के खोखलनेपन और विघटित होते मानवीय मूल्यों की झलक इसमें स्पष्ट दिखाई देती है। नारी अपने अधूरेपन को पूरा करने के लिए बाहर पूर्णता को खोजने का प्रयास करती है। परन्तु पूर्णता के चक्कर में थोड़े से सुख से भी वंचित हो जाती है।

मुख्य शब्द : आर्थिक, अन्तर्द्वद्व, आकांक्षा, पूर्णता, मूल्य, संघर्ष, सन्तुष्ट.

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में समाज की परिस्थितियों और घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस युग में मध्यम वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और उसका प्रभाव साहित्य पर भी साफ दिखाई देता है, मोहन राकेश के रचना साहित्य पर जयशंकर प्रसाद जी का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मोहन राकेश ने मध्यम वर्ग को केन्द्र में रखा है और उसमें भी नारी–पुरूष के सम्बन्धों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। मोहन राकेश का मानना था कि आज की नारी स्वतन्त्र रहना चाहती है और प्रतिदिन आजाद होने का स्वप्न देखती है। परन्तु आत्मनिर्भरता के बिना यह सम्भव नहीं है। आधे–अधूरे की सावित्री सम्पूर्ण जीवन घर की जिम्मेवारियों को निभाने में लगी रहती है परन्तु सन्तुष्ट नहीं होती। मोहन राकेश ने जिस प्रकार नारी के अन्तर्द्वद्व की अभिव्यक्ति की है, शायद ही किसी और ने वैसी अभिव्यक्ति की हो। इस नाटक में उन्होंने मध्यम वर्ग के आर्थिक संघर्ष के साथ–साथ नारी की अतृप्त इच्छाओं का चित्रण किया है। आधे–अधूरे नाटक में मध्यमवर्गीय परिवार के दाम्पत्य जीवन का असन्तुष्ट रूप प्रस्तुत किया है। आधे–अधूरे की सावित्री और उसका परिवार आर्थिक भूख और उससे उत्पन्न आवारापन का शिकार है, मानवीय असन्तोष को इसमें स्पष्ट देखा जा सकता है। इस नाटक में सावित्री अपने जीवन से कभी सन्तुष्ट नहीं हो पाती और

अन्त तक इसी सम्पूर्णता को तलाशती रहती है, मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है परन्तु वही अपूर्ण भी है। यही अपूर्णता व्यक्ति को धीरे–धीरे ऐसे त्रस्त वातावरण में ले जाती है, जहाँ व्यक्ति स्वय ही अपने विनाश को आमंत्रित कर लेता है।

मोहन राकेश ने 1969 में 'आधे–अधूरे' (नाटक) का प्रकाशन किया। इस नाटक के सभी नारी पात्र असन्तुष्ट रहते हैं और थोड़ा सा पूर्णता का सुख पाने के लिए सम्पूर्ण सुख को गवा देते हैं। सावित्री एक सम्पूर्ण पुरूष को पाने की इच्छा में एक पुरूष से दूसरे पुरूष के पास भागती रहती है और अन्त में वह महेन्द्रनाथ से विवाह कर लेती है। परन्तु आगे चलकर उसे अधूरापन महसूस होता है। सावित्री की अपेक्षाएँ बहुमुखी और अनन्त है। वह एक सम्पूर्ण पुरूष के साथ जीवन बिताने के लिए जीवन भर सम्पूर्णता की खोज में भटकती है। इस नाटक में सावित्री की अतृप्ति को प्रभाव उसके बच्चों पर भी पड़ता है, जिसके कारण परिवार टूटने–बिखरने लगता है। बड़ी लड़की बिन्नी भागकर अपनी माँ के प्रेमी मनोज से शादी कर लेती है परन्तु उसे निभा नहीं पाती। छोटी बेटी भी माँ तरह ही असन्तुष्ट स्वभाव की है और उसे शिकायत रहती है कि उसकी ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जा रहा। सावित्री इस नाटक की नायिका है जिसके अनेक पुरूषों के साथ सम्बन्ध हैं। सावित्री के रूप में आधुनिक नारी के स्वरूप को दर्शाने का प्रयास किया है क्योंकि मध्यम वर्गीय परिवार में सुख–सुविधाओं के लिए नारी कई तरह भुमिकाएँ अदा करती हैं। आर्थिक रूप से अपने घर को सुदृढ़ बनाने के लिए वह कमाती है और साथ ही साथ वह गृहस्थी भी सम्भालती है। सावित्री भी इसी तरह की स्त्री है परन्तु असन्तोष के कारण कई पुरूष उसके जीवन में आते हैं, पर उन पुरूषों के माध्यम से वह अपने परिवार की स्थिति भी सुधारना चाहती है। पूरा नाटक आदि से लेकर अन्त तक सावित्री के इर्द–गिर्द घुमता रहता है। सावित्री का परिवार उसी के दम पर खड़ा हुआ है और परिवार के टूटने का कारण परिस्थितियाँ और समाज तो हैं ही, उसका अंहकार भी है। वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने का पूर्ण प्रयास करती है परन्तु सफल नहीं हो पाती। वह अपने परिवार को अपने ढंग से चलाना चाहती है परन्तु यह सम्भव नहीं है क्योंकि सभी को अपनी आजादी प्यारी होती है। यही कारण रहा कि बड़ी बेटी भागकर शादी करती है परन्तु अपने परिवार का प्रभाव उसके स्वभाव में भी साफ देखा जा सकता है। सावित्री की इच्छा है कि महेन्द्रनाथ निठल्ला न रहकर कुछ काम करे, बेटा भी नौकरी करे और बेटियों की शादी अच्छे घर में हों। सावित्री की ये इच्छाएँ उसकी महत्त्वकांक्षा न होकर पारिवारिक दायित्व है। वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए (सिंघानियाँ) द्वारा किए किए गए विचित्र व्यवहार को भी सहन करती है क्योंकि वह अपने बेटे को नौकरी दिलवाना चाहती है। उसके लिए मूल्य चुकाने के लिए वह तैयार है।

सावित्री अपने जीवन से असन्तुष्ट भले ही है परन्तु वह अपने पारिवारिक दायित्वों को बड़ी अच्छी तरह से निभाती है। वह अकेले अपने परिवार का पूर्ण बोझ उठाती है क्योंकि उसका पति निठल्ला और सन्तान विद्रोही है। बड़ी बेटी बिन्नी अपनी मर्जी से भागकर अपनी माँ के प्रेमी से विवाह करती है परन्तु असन्तुष्ट रहती है। इस नाटक में अकेलेपन, अलगाव अतृप्ति साफ दिखाई देती है। बिन्नी ने सिर्फ माँ के संस्कार ही ग्रहण नहीं किए अपितु माता–पिता के बीच उत्पन्न तनाव को देखकर भी वह उससे मुक्त नहीं हो पाती। वह नौकरी करना चाहती है सिर्फ अपने पति को नीचा दिखाने के लिए और इन सब परिस्थितियों में माँ और बेटी में समानता दिखाई देती है। बिन्नी माता–पिता के बीच के तनाव को समाप्त करना चाहती है परन्तु जो स्वयं दुखी हो वह दूसरों को कैसे सुख दे सकता है। वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती है परन्तु मनोज से शादी करने के बाद भी अपने परिवार से जुड़ी रहती है। सावित्री और बिन्नी के बीच सहेली के जैसा सम्बन्ध है और वह अपने वैवाहिक सम्बन्धों के विचारों को माँ के साथ साँझा करती है। बड़ी बेटी पिता के प्रति भी प्रेम और सहानुभूति रखती है परन्तु चाहकर भी वह अपने माता–पिता के बीच का तनाव समाप्त नहीं कर पाती। इस नाटक में बिन्नी का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वह अपने भाई व बहन को भी ममता देती है और एक माँ की तरह उन्हें प्यार करती है।

इस नाटक को आधार बनाकर लेखक ने पारिवारिक मूल्यों के विघटन की समस्या, स्त्री–पुरूष के बीच तनाव, मध्यमवर्ग की आर्थिक समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इस नाटक का नायक महेन्द्रनाथ है जो सावित्री का पति है और सावित्री कामकाजी महिला है। वह अपने घर को व्यवस्थित रखना चाहती है परन्तु जब वह दफ्तर से घर आती है तो पूरा घर अस्त–व्यस्त पड़ा मिलता है। यह सब देख करवह चिड़ जाती है और वह घर की जिन्दगी से ऊब कर बाहर खुशी ढूंढती है। उसने महेन्द्र को ऐसा व्यक्ति समझा जिसके

साथ जीवन नहीं बिताया जा सकता और भोगविलास में डूबी हुई, उतावली व सेवा भाव के अभाव से ग्रस्त औरत है। उसे हमेशा से ही पूर्ण मनुष्य की इच्छा की और इसी कारण वह चार पुरूषों के सम्पर्क में आती है, परन्तु बाद में उसको समझ में आता है कि सभी पुरूष एक जैसे हैं सिर्फ मुखौटे अलग–अलग हैं। पत्नी के अनैतिक सम्बन्ध महेन्द्रनाथ सहन नहीं कर पाता और वह सावित्री के साथ मार–पीट भी करता है। पति की इस तरह की प्रतिक्रिया से सावित्री और भी बेचैन हो जाती है और अपनी बेचैनी को दूर करने के लिए वह नए पुरूषों के सम्पर्क में आती है। इस नाटक में स्त्री स्वतन्त्र होना चाहती है परन्तु साथ ही साथ अपने पति के अनैतिक आचरण को भी सहन करती है और आत्मविश्वास की कमी के कारण पूर्णता को बाहर ही खोजती रहती है। माता–पिता के तनाव के प्रभाव से बच्चे भी अछूते नहीं रह पाते और बड़ी बेटी भी माँ की तरह असन्तुष्ट और उतावली होकर सब फैसले करती है। सम्पूर्णता की खोज में अपने ही हाथों अपने घर को टूटने की कगार पर खड़ा कर देती है। सावित्री अपने पति के बेकार होने पर मजबूरी में नौकरी करती है। वह सिर्फ अपने परिवार के आर्थिक स्तर को सुधारने का प्रयास कर रही है परन्तु परिवार के सदस्य इसमें उसका साथ नहीं देते। सावित्री को अधूरापन खटकने लगता है और परिस्थितियों के अधीन होकर अपना दायित्व निभाने के लिए गृहस्थी की त्रासदी और मन की यातना को झेलना पड़ता है।

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप से आधे–अधूरे नाटक में लेखक ने नारी के अंतः संघर्ष को दिखाया है। परिवार के सम्बन्धों के बीच की कड़वाहट को साफ देखा जा सकता है। स्त्री पुरूष दोनों ही पूर्णता को प्राप्त करने के लिए बाहर भटकते फिरते हैं। परन्तु ज्यादा की इच्छा में अपने वास्तविक सुख से वंचित रह जाते हैं। लेखक ने आधुनिक युग की नारी को चित्रित किया है परन्तु सिर्फ कामवासना में लिप्त नहीं है अपितु अपने परिवार की जिम्मेदारियों को पूर्ण करने के लिए नारी के अंतः संघर्ष को उजागर किया गया है। मूल्यों के विघटित रूप को यहाँ पर देखा जा सकता है। पति–पत्नी के विघटित होते सम्बन्ध और उनका बच्चों पर प्रभाव परिवार को खोखला बना देता है। व्यक्ति अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नैतिक और अनैतिक को भी नहीं समझ पाता।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–93, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
2– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–14, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
3– नेमीचन्द्र जैन, मोहन राकेश के सम्पूर्ण नाटक, पृ0 सं0 247, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
4– नेमीचन्द्र जैन, मोहन राकेश के सम्पूर्ण नाटक, पृ0 सं0 261, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
5– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–105, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
6– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–47, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
7– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–63, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
8– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–60, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
9– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–18, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
10– मोहन राकेश, आधे–अधूरे, पृ0 सं0–98, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।

LBP PUBLICATION